VOL- XI | ISSUE- IX | SEPTEMBER | 2024 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.02 | ISSN 2349-638x

राजस्थानी लोकगीतां मांय समाज

डॉ. श्यामा तंवर
सहायक आचार्य (गृह विज्ञान)
मुरली सिंह यादव प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयरामसर, बीकानेर, (राज.)

शोध-निवार

मिनखां सूं समाज बणै। 'समाज' सबद रो प्रयोग मिनखां रै समूह रै रूपां मांय लियो जावै। समाज रीति-रिवाजां रो समुच्चय है। अलेखूं रीतिया अर न्यारा-न्यारा रिवाजां रै कारण समाज अपणायत री डोर सूं बंध्योड़ो रैवै। गावणो मिनख जीवण री सुभाविक मांग है। गान रै सायरै सूं मिनख रै हिरदय रा साचा उद्‌गार समाज रै सांमी आवै। राजस्थानी लोकगीतां मांय लोकजीवण का सुख-दुख, उल्लास- सौक, खाण-पान, वेसभूसा, रैण-सैण, ब्यांव, उच्छब अर रुढि, विस्वास आद सगळी सामाजिक स्थिति रो चितरण हुवै। इन मांय जीवण रै हरैक पख रा गीत गाइजै। समाज रो छोटे सूं छोटो पख भी लोकगीतां री दुनिया सूं ओझल नीं हुवै। लोकगीतो रो अेक जरुरी अर महताऊ पख है - समाज लोकगीतां रै समाजू अर भावनाऊ पख मांय समाज अर परिवार, लोकगीतां री समाजू प्रवृतियां अर बा री उपयोगिता आद विसै इणरै त्हैत ईज आया करै। लोकगीतां मांय मिनख-परिवार अर समाज रो अेक जुदा नीं होवण आळो अंग बण' र उभरयों है। हरख अर विषाद, सुख दुःख हेत-घिरणा, संजोग अर बिजोग, हीणता अर सबलता आद सगळा मानवीय भावां री सांगोपांग अभिव्यक्ति सामूहिक जीवण री पृष्ठभोम माथै लोकगीतां मांय हुयी है। लोकगीतां सूं लगाव राखणियो मिनख समाज, परिवार अर धरती सारु जीवै! समाज री रचना रै सागै ई लोकगीतां री सिरजणा सरु हुयगी। आपांणै दैनिक वैवार मांय बात-बात मांय गीतां रै बोल मुखरित हुवै। अै गीत फगत संगीत अर भावना रो ईज सिरजण नीं करै बल्कै समाज री रीति-नीति, वैवार-वैवस्था, किया-कळाप, भलै-भूंडै अर ऊंच-नीच नैं ई दरसावै। समाज रो हरेक पख आ मांय निगै आवै जियां जलम, ब्यांव, गिरस्थी, बुढापो, मिरतु, आत्मा अर परमात्मा रो संबंध! लोकगीतां मांय समाज रा सगळा पख घणा सजीव हुय'र भावां नै जगावण अर उण मांय आत्मीयता झलकावण मांय सैयोग देवै। अेड़ै गीतां रो अध्ययन समाज रा सैंग पख उद्‌घाटित करण मांय घणा सहायक सिद्ध होसी।

खास सबद- लोकगीत, समाज, परिवार, जनजीवण, सामाजिक कुरीतियां, रीति-रिवाज।

प्रस्तावना

लोकगीत जनमानस रा बै सुभाविक उद्‌गार है जिका नीं जाणै कद सूं आपणै समाज मांय ठिठुरन पैदा करता चालता आ रैया है। प्रेम, जळण, द्वेस, तड़फण, कसक, नसो, उल्लास अर राग-विराग री स्थिति मिनखां मांय अेक जैड़ी होवणै रै कारण लोकगीत संसार री भावनावां रा आगीवाण बणनै री खिमता राखै।

लोकगीतां रै जलम मांय पारिवारिक जीवण री स्नेहधारा, घिरणा, जीत-हार, सामाजिक उच्छबां रा उमाव-उछाव अर दुख रै खिणां री अश्रुधारा आद सैंग मत सामल हुया करै। बैन-भाई, देवर-भोजाई, नणद-भोजाई, सास-बहु आद सगळा जणा लोकगीतां रै दरपण मांय आपरी सामाजिक रूपरेखा रो चलतो फिरतो चितराम पेस करै जियां -

"म्हारै आंगण आंबो मोरियो,
म्हारै कंबळे पसरी गजबेल,
सहेल्या अ आंबो मोरियो।
म्हारा सुसरा-सा गढ़ का राजवी,
सासूजी ने म्हारा अरथ भंडार,
सहेल्या अे आंबो मोरियो।"

समाज रो अरथ अर परिभासा- लोकगीतां नैं सावळसर जाणण सारू जरूरी है कै मिनख रै समाज नैं जाण्यो जावै। मिनख समाज रै अकठा होवतै रैवण सूं लोकगीत पनपै

अर परंपरा री धरोड़ बण जावै । समाज सबद रो अरथ बतावतां वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा लिख्यो है, ‘‘समाज कोई वस्तु नहीं है, यह जड़ नहीं है। समाज कभी स्थिर नहीं रहता! इस सदैव परिवर्तनशील जटिल व्यवस्था को हम समाज कहते हैं।‘‘रयूटर लिख्यो है, ‘‘समाज एक 'अमूर्त' शब्द है जो समूह के सदस्यों में तथा उनके बीच पारस्परिक संबंधों की जटिलता का बोध कराता है।’’

राजस्थानी लोकगीतां मांय परिवार

राजस्थानी लोकगीता‘र होयड़ै शोधां सूं ओ ठा लागै कै लोकगीतां री काव्यात्मक अनुभूति रो कारण परिवार री मंगळ कामना अर जीवण री रागात्मक जरूरत है। लोकगीतां सूं लगाव राखणियों मिनख समाज, परिवार अर धरती सारु जीवै। जलम हुवण रै सागै ई मिनख नैं अेक परिवार मिलै जिकी पैली सामाजिक संस्था हुवै, जठै मिनख खुद सूं अळगो हुय‘र लोगां रै सागै संबंध बणावै अर वैवस्था रो अनुभव करै। सिछ्या- दिछया, जीवणमूल्यां, सौख, अभिवृत्तियां अर वैवार रै निरमाण रै सागै उणरी भासा नै बोली भी उणनैं परिवार ईज देवै। इण बात री साख सारू औ गीत घणो ओपतो लखावै ।

‘‘माता बड़ी, पिता बड़ा रे, बड़ो कुटंब परिवार,
पिता सूं माता बड़ी जी, राखैला नव मास
माता पिता मावड़ी, थारो पियो दूध,
थांसू उऋण ना हुवे, पिंड सराऊ गया जाय।’’

लोकगीतकारां परिवार री भांत- भंतीली परिस्थितियां रै बिचाळै सूं घणा मारमिक स्थळां नै चुण‘र भावां री सांगोपांग अभिव्यक्ति दी है जियां -

‘‘मारुजी म्हें थांसूं चौगणा कमावां
पोह के तारे म्हें उठी जी, चाकी दई चलाय,
भर-भर झाब पीसण लागी,
पीसग्यों है मण भर धान।
मारुजी घणा कमावणी।’’

राजस्थानी लोकगीतां मांय गिरस्थ जीवण-

आ जाणी-सुणी बात है कै लोकगीतां रो संबंध गिरस्थ जीवण सूं घणो नैड़ै रो है। इण गिरस्थ जीवण में राग है, रस है, हास है, परिहास है, आणद है अर है उमंग, उमाव। जठै मिनख अर समाज अेक दूजै रा प्रतिस्पर्धी नीं वरन पूरक है जियां-

‘‘सास-बहू म्हे चली खेत नै
लीनी गंडोसी हाथ बणाई झूंपड़ी
सासूजी तो पूळा काट्या
म्हे काटया सर र पचास, बणाई झूपड़ी।’’

राजस्थानी लोकगीतां मांय समाज मांय फैल्योड़ी सामाजिक कुरीतियां-

लोकगीतां मांय पड़बिंबित लुगायां रै जीवण री झांकी मांय रैण-सैन, खाण-पान, रीति रिवाज अर कारबार आद रै चितरण रै सागै रूढगत प्रथावां अर पारिवारिक अबखायां रो ई चितराम देखण नै मिलै। सासरै मांय सासू, नणद, जेठाणी री कड़वी बोली, उणरै सागै घर रो कामकाज आद उण सूं सैन नीं हुवै जिण वजैं सूं उणनै आपरै पीयर री याद आवती रैवै अर घर रै सगळा जणां रा निहोरा निकाळै जिणरो चितराम आपां इण गीत मांय देख सकां -

‘‘झरोखा बैठया सुसराजी मोसा बोलै रे,
रसोइयां में बैठया सासूजी मोसा बोले रे,
कदेय न आयो थारो जामण जायो बीरो रे,
महल चढू तो सायाबजी मोसा बोलै रे,
देराण्या बोले बीरा जेठाण्यां बोलै रे,
भर-भर हियो म्हारो, छाती भर आवै रे।’’

राजस्थानी लोकगीतां मांय समाज मांय फैल्योड़ी छोरै - छोरी रै भेदभाव री प्रथा रो ई ठाह लागै।

‘‘नान्या रा दादोसा दसावरां
नान्या रा काकोसा दसावरां
नान्या रा वीरोसा दसावरां
बै तो गया गुजरात, मांझळरात
नान्या रे टोपी मोलावै।’’

छोरी जलम्यां कोई चिंतावां, संताप हुवै उणरो चितराम पेस करती उणरी मां कैवै -

‘‘आमू की क्यारी में, बा‘ ई छै राई,
मत कोई कन्या जणो अे लुगाई।
कन्या जलम म्हैं तो भोत दुख पाई,
पूत जलम सदा सुख पाई।’’

बचपन सूं ईज बेटी आपरी मां मैं देखती रैवणै रै कारण जद बा बडी हुवै तो समाज रा रीति-रिवाजां अर सासरै रै दुखा नैं समझ‘ र बा आपरे घरवाळा नैं चोखो वर ढूंढण खातर विनती करै।

‘‘दादोजी बाई रो वर हेरो, बाबोजी बाई रो वर हेरो,
बिणजारों वर मत हेरो, बिणजारो माया रो लोभी ।‘‘

आं गीतां सूं समाज मांय बालब्यांव, अनमेल ब्यांव आद रो ठाह लागै, जिण मांय अेक बूढो मिनख आपरै धन रो लोभ देय’र छोटी उमर री छोरी सूं ब्यांव करै। आ बात भी समाज रै गळत रीति-रिवाजां अर धन रा लोभी मां-बापां कानी इसारो करै-

‘‘ज्यानी म्हारा मयं जहर विष खाय,
बूढे ने बेटी क्यूं देई अे मेरी माय।’’

अेड़ो लखावै कै जियां- जियां कुप्रथावां समाज नै खिंडळ-बिंडल करती गई, लोकगीतां माय बां रो सुर बित्तो ई मुखरित होवतो रैयो । लोकगीतां मांय दायजै जैड़ी प्रथा रो भी चितराम देखण नै मिलै। घर री माड़ी स्थिति हुवण रै कारण मां-बाप नैं छोरी खातर बींद ढूंढण मांय घणी मुसीबत देखणी पड़ै अर इण कारण छोरी री उमर भी घणी हुय जावै, जिणरा भाव इण लोकगीत मांय घणा सोवणा है-

‘‘मायड़ ए मायड़ मोहे परणाय
म्हारी जोड़ी री जावै सासरै जी हो।
बे छे बाई मोटा राव मोटो तो मांगे बाई दायजोजी ओ।
थे छो बाबुल मोटा राव मोटो तो दिया दायजो जी ओ।’’

ओळूं नांव रै गीत मांय घूंघटै जैड़े रीति-रिवाज रो वरणाव सोचण जोग है जिन मांय दुखी धीवड़ी आपरै बीरै नैं निहारती घूंघटै माय झर-झर रोवै।

‘‘जागो ओ जामण जाया बीर,
नींदडली किम आवै राज,
थांरी ओ लाडक बाई सासरियै झुरावै राज,
झुरै झुरावै बैनड़, काळा काग उडावै राज।‘‘

निष्कर्ष-

इण समूचे शोधकार्य रो उददेश्य साफ है कै इण सूं लोकगीतां रै मारफत जनजीवण रा सगळा पखां रा आपां नै दरसण हुया करै अर बां रै दरपण मांय आपां अेक खास जनसमुदाय री भावनाओं नै देख सकां। हरेक जात कै जनसमाज रा आपरा गीत होया करै। उण समाज रै जीवण रै लखाव री अभिव्यंजना देखण नै मिलै। राजस्थानी लोकगीतां मांय समाज रै सगलां पखां नै देख‘ र तो औ ईज कैय सकां कै मिनखां रै समूह सूं समाज बणै अर मिनख समाज री इकाई रै रूप मांय आपरी महताऊ भूमिका राखै। साहित्य मांय समाज री अबखायां, विडरूप साच, जोगती-अजोगती व्यवस्थावां रै सागै ई आछै जीवण री दीठ मिलै। ओ जसजोगों जीवण अेक सजग, सचेत अर विचारवान मिनख रै समाजू सरोकारां सूं ई संभव होवै। जिण भांत मिनख चेतनाशील रैय‘ र समाज रै उत्थान मांय योगदान देवै, उणी भांत समाज ई जागतो रैवै अर मिनख री चेतना रै ऊजलै रूप माय बधापो करै। इण दीठ सूं आं माथै करणो जावण वाळो ओ शोधकार्य घणो उपयोगी अर समसामयिक दीठ सूं महताऊ सिद्ध होसी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

(१) राजस्थान के लोकगीत (दो भाग), डह्. स्वर्णलता अग्रवाल
(२) राजस्थानी लोकगीत, रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत
(३) राजस्थानी लोकगीत (भाग एक), सूर्य करण पारीक
(४) गीतां रो गजरो, श्रीमती माणकी देवी
(५) क्यूं दीनी परदेश, विजयदान देथा
(६) दोरौ धीया नैं सासरौ, विजयदान देथा
(७) गीत संग्रह, लक्ष्मी सोनी
(८) राजस्थानी पालणा गीत, श्रीमती लीला सोमानी
(९) राजस्थानी लोकाचार गीत, चन्द्रकान्ता व्यास
(१०) लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या, डह्. श्रीकृष्णलाल
(११) भारतीय संस्कृति के सामाजिक गीत, श्री पुरुषोत्तमलाल पुरोहित
(१२) राजस्थान के रीति-रिवाज, जगदीश सिंह गहलोत
(१३) समाज शास्त्र के सिद्धान्त, वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा